

PARLIAMENTARY DEBATES

(Part II—Proceedings other than Questions and Answers)

OFFICIAL REPORT

4701

4702

HOUSE OF THE PEOPLE

Wednesday, 14th April, 1954

The House met at Two of the Clock

[MR. SPEAKER in the Chair]

QUESTIONS AND ANSWERS

(See Part I)

2-55 P.M.

ELECTION TO COMMITTEE

INDIAN CENTRAL SUGARCANE COMMITTEE

Mr. Speaker: I have to inform the House that up to the time fixed for receiving nominations for the Indian Central Sugarcane Committee, two nominations were received. As the number of candidates is equal to the number of vacancies, I declare the following members to be duly elected:

- (1) Sardar Jogendra Singh.
- (2) Shri P. R. Kanavade Patil.

COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS' BILLS AND RESOLUTIONS

PRESENTATION OF SIXTH REPORT

Shri M. A. Ayyangar (Tirupati): I beg to present the Sixth Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions.

DEMANDS FOR GRANTS—contd.

Mr. Speaker: The House will now proceed with the further discussion and voting on the Demands for 28 P.S.D.

Grants under the control of the Ministry of Commerce and Industry, moved on the 12th April, 1954. The cut motions also are under discussion.

श्री शिवमूर्ति स्वामी (कुप्टगी): अध्यक्ष महोदय, मैं कुछ दिन पहले वर्धा की यात्रा का गया, और वहाँ पर मुझे दो दिन रहने का अवसर हासिल हुआ। वर्धा में महात्मा जी के आश्रम और वहाँ के सेवकों को देखने के बाद जब उनकी सुबह की प्रार्थना हुई तो उसको भी सुना और साथ में उसके बाद जो लेक्चर हुआ उसको भी सुना। लेकिन उस लेक्चर में आज कल की हुकूमत के बारे में खुसून जो घरलू सनत हैं अर्थात् स्माल स्कूल इन्डस्ट्रीज, उसके बारे में उनके खयालात सुन कर ऐसा मालूम होता था कि हालाँकि आज हम आजाद होने के बाद सातवें साल में कदम रख रहे हैं, फिर भी जो घरलू सनत और छोट उद्योगों की तरक्की है वह पहले जमाने से भी जब कि एलियन गवर्नमेंट हमारे ऊपर हुकूमत करती थी, रोज बरोज गिरती जा रही है। हमें मालूम नहीं होता कि उनकी तरक्की का रास्ता भी कुछ हो सकता है। मैं इस सम्बन्ध में ज्यादा वलीलें न दूँगे हुए सिर्फ इतना ही कहता हूँ कि जो आदर्श संघ की प्रकटना है उससे हमको साफ जाहिर होता है कि असल गांधीवाद का क्या आइडिया था और उन्होंने किन खयालात को लोगों के सामने हिन्दुस्तान में रखने की कोशिश की है। जनवरी १९५४ का 'रूलर इंडिया' है, वह कहता है :

"In a cheerless and universally depressed state of mind of the